

Рукописное преданіе „Олицетворенія“, приписываемаго Григорію Паламѣ.

Имѣющійся въ обращеніи текстъ „Олицетворенія“, по ошибкѣ приписаннаго Григорію Паламѣ, въ дѣйствительности принадлежащаго Михаилу Акоминату, основанъ на Парижскомъ изданіи 1553: и Migne (Patrol. 150) и A. Jahn (Halis Sax. 1884) повторяютъ — второй съ нѣкоторыми отступленіями въ частностяхъ — текстъ editionis principis. Парижскіе издатели (Adrien Turnèbe и Guillaume Morel) печатали свое изданіе по cod. Paris. 2465 и использовали его вполнѣ добросовѣстно. Сличивъ нѣсколько страницъ, мы убѣдились, что оно почти безъ отступленій воспроизводитъ текстъ рукописи.

Cod. Paris. 2465 относится къ XVI в.; на два, приблизительно, столѣтія древнѣе cod. Laur. 59,12 сохранившій „Олицетвореніе“ среди произведеній Михаила Акомината. Даже при бѣгломъ ознакомленіи бросается въ глаза, что L(aug.) во многихъ мѣстахъ даетъ болѣе исправный текстъ, чѣмъ P(aris.) Укажемъ нѣсколько примѣровъ¹⁾.

Страница	Строчка	P	L
2	11 св.	<i>παρεκτείναμεν</i> (неправильная форма)	<i>παρεξετείναμεν</i>
—	12 св.	<i>δικαιοτέρω</i> (безсмысленно)	<i>δικαστικῶ</i>
3	18 св.	<i>παρέχεν</i>	<i>ἐπιχρώξεν</i> (болѣе изысканное выраженіе)
11	10 св.	<i>αὐτὰ δὲ, ἀλλὰ καὶ προῦλαλοῦντα</i>	<i>αὐτὰ δὲ ἀλλὰ, καίπερ οὐ λαλοῦντα</i> (такъ уже исправилъ Янъ по собственной догадкѣ)
16	18 св.	<i>καὶ σπᾶσαι</i> (безсмысленно)	<i>κατασπάσαι</i>

1) Цитируемъ страницы и строчки изданія Jahn'a; св. = сверху, = сн. = снизу.

Страница	Строчка	P	L
16	20 св.	<i>τὸ παρὰ τῆς παροιμίας</i>	<i>τὸ παρὰ τῆς τραγῳδίας</i> (слѣдуетъ цитата изъ трагедіи Еврипида)
—	2 сн.	<i>συνέχομαι</i> (безсмысленно)	<i>συνάχθομαι</i>
18	9 св.	<i>πρὸς τὸν νηπίαχον ἄνωθεν</i> (безсмысленно)	<i>πρὸς τὴν νηπίαχον ἄνοιαν</i>
20	8 сн.	<i>ἀργυρωνήτω</i>	<i>ἀλωνήτω</i> (болѣе изысканно)
23	2 сн.	<i>συστοιχία</i> (безсм.)	<i>σύστοιχος</i>
—	1 сн.	<i>ἐνεργεία</i>	<i>ἐναργεία</i> (такъ предлагалъ писать Jahn)
26	9 св.	<i>ἀποστροφήν</i>	<i>ἐπιστροφήν</i> (исправилъ Jahn)
—	10 св.	<i>λόγων</i>	<i>λόγων</i> (исправилъ Jahn)
27	4 сн.	<i>εἰ τολμηρόν</i>	<i>εἰ μὴ τολμηρόν</i> (требуется смысломъ)
30	10 сн.	<i>παράπαν</i>	<i>τὸ παράπαν</i> (τὸ предлагалъ вставить Jahn)
—	7 сн.	<i>ἐπέστραπται</i>	<i>ἐπέστραπτο</i> (такъ Jahn)
31	6 сн.	<i>περὶ τὰ θεῖα</i> (безсм.)	<i>ἐπιταθεῖσα</i>
33	4 св.	<i>παρὰ</i>	<i>περὶ</i> (такъ предлагалъ Jahn)
34	9 сн.	<i>ἀριθυμητικὴν</i>	<i>ροθυμητικὴν</i> (лучше по смыслу)
38	1 сн.	<i>ὑποτεινόμενον</i>	<i>ὑπερτεινόμενον</i> (Jahn предлагалъ <i>ἐπιτεινόμενον</i>)
39	2 св.	<i>ἔρειμμα</i> (безсмысленно)	<i>ἔρριμμα</i>

Какое значеніе cod. Laur. имѣеть для возстановленія текста „Олицетворенія“, явствуетъ и изъ того, что въ немъ сохранились цѣлыя фразы, пропущенныя въ Paris. Такъ напр. стр. 2,7 св. цитата изъ стоика Клеанѳа въ P обрывается словами *ναί, βασιλικόν γε*; въ L слѣдуютъ еще слова *πλήν ὁμως εἰπὸν πάλιν · ὡς ἂν ἐπιθυμῶ ταῦθ' ὅπως γενήσεται*, какъ у Галена, Hipp. et Plat. plac. V 6, p. 476 K. (cp. Cleanthes frg. 84 Pearson). — Стр. 5,8 св. послѣ

συνθάπτομαι L имѣетъ еще слова *μᾶλλον δὲ αὐτῷ θάπτομένῳ ἐνθάπτομαι*, выпавшія въ P вслѣдствіе *ὁμοιοτέλετον*. — Стр. 28,9 св. послѣ *ἀνατίθῃσιν* въ L читается: *εἰ μὲν ἐγὼ ἠγοῦμαι, αὐτὴ δὲ ἐπεταί, δικαίως ἂν πάντων ἀτόπων αἰτιῶτό με*, и только благодаря этой фразѣ слѣдующая *εἰ δὲ αὐτὴ μὲν ἄρχει κτλ.* получаетъ смыслъ. — Стр. 38,5 послѣ *κακύνεται* мы находимъ въ L слѣдующую, по смыслу вполне подходящую, тираду: *καὶ ἀτεχνῶς καὶ ἐκμελῶς ἀναρμοστεῖ καὶ κατασχώνει μὲν ἑαυτήν, συνασχημονεῖν δὲ καμὲ προσβιάζεται*. Въ P она пропущена.

Кромѣ этихъ сравнительно небольшихъ пропусковъ Парижской рукописи, *cod. Laur.* пополняетъ значительную лакуну въ самомъ концѣ произведенія. Въ *Paris.* и въ печатномъ текстѣ приговоръ судей непонятенъ. По мнѣнію святыхъ отшельниковъ, душа не имѣетъ права жаловаться на тѣло. Если оно ея не слушается, то виновата сама душа, такъ какъ плохо его воспитала. Не можетъ душа ссылаться и на ап. Павла и его сѣтованія (Римл. 7,15) на плоть немощную. „Слушай, что имѣетъ въ виду и почему такъ говорить апостоль. До пришествія Господня страшна была смерть, страшенъ имѣющій власть надъ смертью. Посему и у Исаи говорили: да ямы и пиемъ, утрѣ бо умремъ“. Этой цитатой внезапно („etwas plötzlich“, по выраженію Krumbacher'a *Vuz. Lit.*² 486) обрывается рѣшеніе судей. Какъ видно, даже начатое объясненіе смысла словъ ап. Павла не доведено до конца. Ясно, что авторъ такимъ образомъ не могъ оканчивать свое произведеніе. Дѣйствительно, въ L за цитатою изъ Исаи слѣдуетъ продолженіе приговора, придающее ему смыслъ и законченность. Получаемое изъ L добавленіе по объему своему равняется приблизительно тремъ страницамъ того формата, въ которомъ у Тейбнера печатаются тексты греческихъ писателей. Мы сообщаемъ новый текстъ въ видѣ прибавленія къ настоящей статейкѣ.

Такимъ образомъ мы видимъ, что L во многихъ мѣстахъ сохранилъ текстъ „Олицетворенія“ въ болѣе исправномъ видѣ, чѣмъ P. Но было-бы ошибочно, если-бы кто по этой причинѣ вздумалъ пренебречь Парижской рукописью. Дѣло въ томъ, что и она, въ свою очередь, нерѣдко даетъ правильныя чтенія тамъ, гдѣ *cod. Laur.* испорченъ. Ограничимся немногими примерами:

Страница	Строчка	P	L
6	19 св.	<i>ὑπερεφρονήσατε</i>	<i>ὑπερεφρωνήσατε</i> (безсмысленно)
7	7 св.	<i>παρακινώσης</i>	<i>παρακινώσης</i> (vox nihili)
8	8 св.	<i>χρήσεως</i>	<i>χρησεται</i> (безсм.)
—	9 св.	<i>ἀποκύει</i>	<i>ποιεῖ</i> (искаженіе цитаты изъ посл. Яковл. 1,15)
17	8 св.	<i>ἀνανθέντι</i>	<i>ἀναθέντι</i> (безсмысл.)

Предположеніе, что въ этихъ и подобныхъ случаяхъ писецъ Парижской рукописи по догадкѣ исправилъ испорченный текстъ, было-бы, конечно, недопустимо.

Но еще болѣе убѣдительно то обстоятельство, что въ P сохранились цѣлыя фразы, пропущенныя въ L; напр. слѣдующія:

стр. 8, строчка 3 св.: *παρείχον· εἰ τοῖς προστυχοῦσιν ἀπεχρήτο, εἰ μόνον ἀποζηῖν ἐδικαίου, οὐχ ὕβριν ἄν.*

19, 6 св. *καὶ συνελόντι φάναи κακῶς διακειμένῳ συμβασανίζομαι, ἀνακεφαλαιώσομαι.*

19, 9 св. *καὶ τὴν ἀρμόττουσαν ἐπιθεῖναι τῷ ὑβρίζοντι δίκην καὶ μὴ ἐφεῖναι ἀδικεῖν.*

26, 14 св. *οὔτε εἰς μαγείρων καὶ τραπεζοποιῶν τάξιν κατάγεσθαι, ὡσπερ νῦν τῆς ἐμῆς ψυχῆς ἠκούσατε.*

32, 3 св. *δίδωμι, σὴν χάριν, ἐμὲ πρῶτον ταῖς ἡδοναῖς ἐπιχαίρειν καὶ πίμπλασθαι, πρὸς δέ.*

33, 12 св. *τῇ παθητικῇ ξυνωρίδι ἐφήσι· παρ' ὅσον δὲ τοῦ κρατεῖν κατὰ βραχὺ παραλύεται, παρὰ τοσοῦτον.*

Замѣтимъ кстати, что большинство выпавшихъ въ L тирадъ имѣеть приблизительно одинаковый объемъ, 60—65 буквъ. Въ архетипѣ онѣ, очевидно, составляли отдѣльныя строчки. На стр. 33, гдѣ пропускъ больше обыкновеннаго, онъ могъ произойти вслѣдствіе *ὁμοιοτέλευτον*, такъ какъ словамъ *τῇ παθητικῇ* предшествуетъ *παρὰ τοσοῦτον*, повторяющееся въ концѣ выпавшей тирады.

Изъ сказаннаго видно, что P независимъ отъ L. Обѣ рукописи желаннымъ образомъ другъ друга дополняютъ, и будущему издателю „Олицетворенія“ придется равномѣрно принять во вниманіе и ту и другую.

Прибавленіе.

Неизданный конецъ „Олицетворенія“, сохранившейся въ cod. Laur. 59, 12.

Ὁὐ γὰρ πνευματικὸν ἦν παρ' ἐκείνοις λουτρὸν οὐδὲ μυστηρίων θείων ἀποκάλυψις. Τὸν τηριαυτα γοῦν καιρὸν λέγει, ὅτι „ἔζων χωρὶς νόμου. Ἐλθοῦσης δὲ τῆς ἐντολῆς ἡ ἁμαρτία ἀνέζησεν“. Εὐχαριστῶ μέντοι, φησί, τῷ Θεῷ διὰ Ἰησοῦ Χριστοῦ τοῦ Κυρίου ἡμῶν· δι' αὐτοῦ γὰρ 5 ἡλευθερώθη τῆς πρώην τυραννίδος καὶ τοῦ δουλεύειν τῇ ἁμαρτίᾳ. Ὅθεν ἐπάγει· „Τὸ γὰρ ἀδύνατον τοῦ νόμου, ἐν ᾧ ἡσθένει διὰ τῆς σαρκός, ὁ Θεός, τὸν ἑαυτοῦ υἱὸν πέμψας ἐν ὁμοιώματι σαρκὸς ἁμαρτίας, κατέκρινε τὴν ἁμαρτίαν ἐν τῇ σαρκί, ἵνα τὸ δικαίωμα τοῦ νόμου πληρωθῇ ἐν ἡμῖν τοῖς μὴ κατὰ σάρκα περιπατοῦσιν, ἀλλὰ κατὰ πνεῦμα“.

10 Καὶ ἀλλαχοῦ πον φησὶν· „Οἱ δὲ τοῦ Χριστοῦ τὴν σάρκα ἐσταύρωσαν σὺν τοῖς παθήμασι καὶ ταῖς ἐπιθυμίαις“. Τίνα γὰρ παθήματα ἢ τίνες ἐπιθυμίαι τοσοῦτον δυσαντίβλεπτοὶ εἰσιν, ὡς τῇ σπουδαίᾳ ψυχῇ τοιμᾶν ἀτενίζειν ἔντρανον καὶ οὐχὶ μᾶλλον ὡς δουλικῶ τῷ φρονήματι καὶ τῷ σχήματι τὰ ἐπιταττόμενα ὑποδορῆστεύειν, ἅτε συνσταυρωθεῖσαι τῷ Χρι-

15 στῷ καὶ συννεκρωθεῖσαι τῷ ὁμοιώματι τοῦ θανάτου αὐτοῦ διὰ τοῦ βαπτίσματος. Οὐ γὰρ ὡς μεγαλορρημῶν μεγαλαυχεῖ ταῦτα ὁ ἀπόστολος· ἀλλὰ πάρεστιν ὁρᾶν τὸ ὑπ' ἐκείνου γνησίως μαθητευθὲν ἄγιον ἔθνος, τὸ πανταχοῦ τῆς ἐρήμου καὶ τῆς οἰκουμένης ἐκλάμψαν καὶ ὑπὲρ τὰ ὀρώμενα πολιτευόμενον. Τοὺς ἱερούς φημι ἀσκητάς, οἱ τὸ ἐν ἡμῖν

20 παθαινόμενον καὶ σαρκικόν οἶα νεκρὸν περιέφερον, ὡς καὶ τὰ τυραννικώτατα πάθη, τὸ πεινῆν καὶ τὸ ὑπνοῦν, περιάγειν ὄπη καὶ βούλεται· ὁποῖος ὁ ἡμέτερος Σάββας καὶ ὁ Ἀρσένιος. Ὡς ὁ μὲν ὅλας ἐβδομάδας ἡμερῶν ἄσιτος διαμένων, ὅτε βουληθεῖη φαγεῖν, „φάγε, Σάββα“, ἔλεγεν, „ἐκδέχεται γὰρ σε τὸ τῆς νηστείας στάδιον“. Ὁ δὲ νύκτας ἀύπνους

25 ἐπὶ προσευχῇ διεργηγορῶς, τῷ παγκρατεῖ ὑπνω ἐπέττατε, λέγων· „δεῦρο, πονηρὲ δοῦλε, καὶ κεκημηκότα διανάπασσον“. Τοιοῦτοι μὲν οἱ τοῦ Χριστοῦ, οἱ, τῷ Σωτῆρι συννεκρωθέντες διὰ τοῦ βαπτίσματος, ὡς ἐκείνος οὐκέτι ἀποθνήσκει, οὕτω καὶ αὐτοὶ ἀναμαρτήτως ἐν καινότητι ζωῆς περιπατοῦσι, συνοδοιπόρον ἀγαθὸν τὸ ἐπιθυμητικὸν ἔχοντες· ὅπερ, ἐκ

30 μειρακίου ἐν ἔθει τοῦ ὑποτάττεσθαι γινόμενον, ἕως γήρως καὶ πρεσβίου ταῖς ἀγίαις ψυχαῖς φιλοσόφως ὑποούργησεν. Ἄν δὲ τις ψυχὴ μετὰ τὸ

λουτρὸν βλακικῶς ραστωνεύεται καὶ κίνδυνος ὑπνῶσαι εἰς θάνατον, τότε τὸ σαρκικὸν φρόνημα ἀναξὴν παρεγχερεῖ καὶ, ταῖς παρ' αὐτοῦ ἡδυπαθείαις τὸ σύντονον τῆς ψυχῆς ἐκνευρίσαν, εἰς ἀντίθετον μοῖραν ἀντικαθίσταται, καὶ, ὃ φησιν Ὡσηέ, „Ἐφραϊμ ὡς δάμαλις δεδιδαγμένη ἀγαπᾶν νεῖκος“, καὶ „κατεδυνάστευσεν Ἐφραϊμ τὸν ἀντίδικον αὐτοῦ, κατεπάτησε κριμα, ὅτι ἤρξατο πορεύεσθαι ὀπίσω τῶν ματαίων“. Καὶ πάλιν ὁ αὐτός φησιν· „Καὶ ἦν Ἐφραϊμ ὡς περιστερὰ ἄνους οὐκ ἔχουσα καρδίαν· εἰς Αἴγυπτον καὶ Ἀσσυρίους ἐπορεύετο“. Ἡλίκων γὰρ χρεία ἰδρωτός καὶ ἀτεχνῶς ὡσεὶ θρόμβοι αἵματος στάζοντος, τὸν μὲν Ἐφραϊμ, τὸ σαρκικὸν φρόνημα, μεταδιδάξει μηκέτι ζυγομαχεῖν πρὸς τὴν 10 λογικὴν ψυχὴν, ὡς φιλόνεικον, μηδὲ καταδυναστεύειν αὐτὴν, ὡς ἀντίδικον, καὶ καταπατεῖν τὴν κρίσιν τοῦ λογικοῦ, ὅτι ἤρξατο πορεύεσθαι ὀπίσω τῶν ματαίων ἐπιθυμιῶν αὐτοῦ· ἔτι δὲ ἐπιστρέφειν ἐκπετασθεῖσαν ὡς ἄνουν περιστερὰν εἰς Αἴγυπτον καὶ Ἀσσύρια ἔθη ἐκδειδητημένην. Καὶ δὴ τὰ Σολομώντεια ἐκεῖνα, ὅφ' ὧν τὸ καθ' ἡμᾶς κόσμιον κατασειέται, μεθ' 15 ὄσων ἀγῶνων καὶ μόχθων καταρθοῦται, ὥστε τὸν οἰκέτην τὸν τέως βασιλεύοντα ὑποτάξει καὶ τὸ ἐν πλησμονῇ ἄρτων σπαταλῶν ἄφρον δι' ἐγκρατείας παιδαγωγῆσαι καὶ σωφρονίσει καὶ τὴν οἰκέτην γινῶναι τὴν ἑαυτῆς κυρίαν καὶ μὴ ἐξωθεῖν αὐτὴν καὶ ἀντεισάγειν ἑαυτὴν παρὰ τὴν φυσικὴν ἀκολουθίαν καὶ τάξιν. Ὅτι δὴ καὶ μέγιστος ἀγὼν τῆ τλήμονι 20 ψυχῆ ἐπαναγαγεῖν τὸ ἀκόλαστον εἰς τὸ γινῶναι σεαυτόν. Χαλεπὸν γὰρ κῶνα γεῦσαι. Ὅμως τῆς ψυχῆς ἀμελούσης καὶ ἐνδιδούσης τὸ πλήμμελῶς φέρεσθαι τῆς αὐτῆς ἐστὶ καὶ τὸ ἐπιστρέφειν καὶ ἐκ φαύλον σπουδαῖον γίνεσθαι καὶ ἦν ἔλαχε τάξιν ἐκ φύσεως, ταύτην κοσμεῖν. Αὐτοκρατικῶς γὰρ ἡ νοερὰ ψυχὴ προηγεῖται παντός λόγου καὶ ἔργου· τὸ 25 δὲ παθαινόμενον κεκολασμένον μὲν καὶ διὰ βελτίστης διατριβῆς παιδαγωγούμενον ἔπεται ἐκουσίως, ἀνθιστάμενον δὲ καὶ διατεταραγμένης ἀναλογίας τὴν φυσικὴν τάξιν ἀνταλλαζόμενον εἰς ἀδιεξίτητον δίκην συνεφέλλεται. Διὰ τοῦτο καὶ ὁ κῆρυξ τῆς ἀναστάσεώς φησι. „Τοὺς γὰρ πάντας ἡμᾶς φανερωθῆναι δεῖ ἔμπροσθεν τοῦ βήματος τοῦ Χριστοῦ, 30 ἵνα νομίσῃται ἕκαστος τὰ διὰ τοῦ σώματος πρὸς ἃ ἔπραξεν, εἴτε ἀγαθὸν εἴτε κακόν“. Ναὶ καὶ γένοιτο, ὅτε Θεὸς κρινεῖ τὴν οἰκουμένην ἐν

4 Осн 10, 11. — 5 Осн 5, 11 (имѣеть членъ τὸ передъ κριμα). — νεῖκος] νίκος L. — 8 Осн 7, 11. — 9 Еванг. отъ Луки 22, 44. — 12 καὶ] εἰ L. — 15 Притч. 30, 15; ср. стр. 7 Jahn. — 21 Постл̄ γὰρ, быть можетъ, выпало χορίου. Ср. Theocr. Idyll. 10, 11; Gregor. Cyrp. 297. — 23 Вмѣсто σπουδαῖον ожидается σπουδαῖαν. — 24 Ср. пословицу Σπάρταν ἔλαχε, ταύταν κόσμει Diogen. 716, Greg. Cyrp. 176 (Eurip. frg. 723 N). — 29 Постл. къ КоринѠ. II 5, 10. — 32 Дѣян.

δικαιοσύνη, φανερωθῆναι ἡμᾶς ἐνώπιον αὐτοῦ ἐν ψυχαῖς κεκαθαυμέναις
καὶ σώμασιν ὁμόφροσι καὶ ἱκανωθῆναι εἰς τὴν μερίδα τοῦ κλήρου τῶν
ἁγίων ἐν τῷ φωτί, καὶ μηδὲνα τῶν ἡγαπηκότων τὴν ἐπιφάνειαν αὐ-
τοῦ μήτε γνώμης μοχθηρίας μήτε σαρκὸς φαυλότητι εἰς τὴν χώραν τῶν
ἁσεβῶν ἀπενεχθῆναι. Ἐν Χριστῷ Ἰησοῦ τῷ Κυρίῳ ἡμῶν αὐτῶν ἡ
δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας. Ἀμήν.

Αποστ. 17, 31. — 3 Посл. къ Тимѳ. II 4, 8.

Κιεβῶ.

Α. ΣΟΝΝΙ.